

## ज्ञानपथ

सर्वत्र दुःख व्याप्त है। यह प्रथम सत्य है।

तृष्णा से ही दुःख जन्म लेता है। यह दूसरा सत्य है।

तृष्णा का अर्थ है विचक्षणा रहित मोह।

तृष्णा अर्थात् आवश्यकता से बढ़कर इच्छाओं का होना।

तृष्णा अर्थात् 'अति'।

तृष्णा अविद्या जनित है। यह तीसरा सत्य है।

आध्यात्मिक विद्या की कमी को अविद्या कहते हैं।

अविद्या को अष्टांग मार्ग से ही दूर किया जा सकता है। यह चौथा सत्य है। अष्टांग मार्ग अर्थात् सही दृक्पथ, सही इच्छाएँ, सही बात, सही जीविका, सही व्यवहार शैली, सही श्रद्धा, सही एकाग्रता और सही ध्यान के साथ होने वाली पूरी आध्यात्मिक साधना की रीति।

प्रकृति सदैव विद्यमान है परन्तु निरन्तर अपना रूप बदलती रहती हैं। ऐसी निरन्तर परिवर्तनशील प्रकृति में हम जी रहे हैं।

हमारे आसपास के सभी विषय सदा बदलते रहते हैं। इस सच को हमेशा याद रखना ही ज्ञानपथ में चलना कहा जाता है।

इसी प्रकार हर प्राणी में रहने वाला 'मैं' भी प्रकृति का एक अंश ही है। 'मैं' भी हमेशा परिवर्तनशील भावनाओं का समुदाय है। वास्तविकता में 'मैं' कहीं नहीं है लेकिन मैं एक चीज है। हर पल इस सत्य में जीना ही ज्ञान पथ में जीना है।

प्रत्येक कार्य करते हुए मध्यमार्ग में रहना ही ज्ञानपथ में जीना है।

अहिंसा परमोधर्मः। सत्य तो यह है कि शारीरिक हिंसा ही वास्तविक हिंसा है क्योंकि मानसिक हिंसा तो दूसरों की अनुमति से होती है। सदैव अहिंसा में जीना ही ज्ञानपथ में जीना है।

प्रत्येक कर्म का प्रतिकर्म होता है। यही कर्म सिद्धान्त कहलाता है। इस सच्चाई को सदा याद रखना ही ज्ञानपथ में जीना है।

सबसे सब कुछ सीखना ही प्रज्ञा कहलाता है।

प्रज्ञापथ ही ज्ञान पथ है।

सदा सभी लोगों को सिखाना ही करुणा है। करुणापथ ही ज्ञान पथ है।

समस्त प्राणियों से हमेशा दोस्ती का भाव रखना है। दोस्ती का पथ ही ज्ञान पथ है।  
उदाहरण हैं - गौतम बुद्ध।

गौतम बुद्ध एक असाधारण सत्य परिशोधक है।

गौतम बुद्ध एक असाधारण ध्यान योग परिसाधक हैं।

गौतम बुद्ध एक असाधारण कर्मसिद्धान्त के परिबोधक हैं।

गौतम बुद्ध असाधारण ध्यान और ज्ञान परिप्रचारक हैं।

जो लोग ज्ञानपथ में प्रवेश करना चाहते हैं, उन सब को उन्ही की तरह सत्य के परिशोधक, कर्म सिद्धान्त के परिबोधक और ध्यान योग परिसाधक तथा ध्यान-ज्ञान परिप्रचारक बनना चाहिए।

ज्ञानपथ में यात्रा करने का मतलब यही है।

सभी पिरामिड मास्टर्स ज्ञानपथ पर चल रहे हैं।